IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 3, December 2023

Models of Economic Development

Smt. Usha Thakre and Dr. Ramsingh Kushwaha
Department of Economics
Government College, Umranala, Chhindwara
Mandyanchal Professional University, Bhopal
ushathakre82@gmail.com and ram.kushwaha2008@gmail.com

विकास के विविध प्रारूप

प्रस्तावना

इस इकाई से पूर्व हमने यह जाना कि विकास की अवधारणा का तात्पर्य क्या है विकास के विभिन्न आयाम कौन–कौन से है। पक्ष को ही प्रधानता दी जाती है।

द्वितीय विश्वयुद्वोतर परिदृश्य में विकास और उससे जुड़ी बहसें सामने आयी है। बहुत हद तक विकास के विभिन्न प्रारूप इस बात पपर निर्भर करते है कि विकास का लक्ष्य एवं उसकी प्रक्रिया कैसी हो, यदि विकास की प्रक्रिया का माध्यम प्रतिस्पर्धा है तो वह पूँजीवादी दायरे में रह कर ही प्रारूप प्रस्तुत करेगी। इस पूँजीवादी प्रक्रिया की आलोचना भी काफी हुई है। विशेष तौर पर पिछड़े एवं विकासशील कहे जाने वाले देंशों के विद्वांनो ने इसकी आलोचना की है। इन सबसे अलग महात्मा गॉधी ने ग्राम आधारित विकास की नवीन अहिंसक संकल्पना प्रस्तुत की।

इस इकाई में हम विभिन्न विचारधाराओं से प्रेरणा प्राप्त कर विभिन्न विद्वानों द्वारा प्रस्तुत विकास प्रारूपों का अध्ययन करेंगे।

संदर्भ एवं उपयोंग ग्रंथ :–

[1]. पीटर्स, जे.एन. डवलपमेंट थ्योरी : डिकन्सट्रक्शन्स/रीकन्सट्रक्शन्स,सेज पब्लिकेशन,लंदन,2001 लाटेन,जे.,थ्योरी ऑफ डवलपमेंट : कैपिटलिज्म, कलोनियलिज्म एंड डिपेडेन्सी,पोलिटी प्रेस,लंदन,1989 क्राउन,एम.जी एंड शेंटोन, आर.डब्ल्यू, डाक्ट्रीन्स ऑफ डवलपमेंट,राउटलीज,लंदन 1996 घोष,बी.एन.,गांधियन पॉलिटिकल इकॉनॉमी, एश्गेट पब्लिकेशन्स,हैम्पशायर, यूके,2007 नारायण,एस., रिलेवेन्स ऑफ गांधियन इकॉनॉमिक्स, नवजीवन पब्लिशिंग हाउस,1970

[2]. शर्मा,आर., गांधियन इकॉनॉमिक्स,दीप एंड पब्लिकेशंस प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली,1997 यादव,बी.एस.,तबस्सुस, क. ,मसूद,एच., आर्थिक विकास एवं नियोजन, यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2008 आचार्य, नंदकिशोर, सभ्यता का विकल्प – गांधी दृष्टि का पुनराविष्कार, वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर, 1995. ।